Roll. No. .....

198

Total Printed Pages : 4

B.A. (Pt. III)
4007- II-A

Hindi Lit. - II

B.A. (Part III) EXAMINATION, 2023
(For Non-Collegiate)

(Faculty of Arts)
[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part III]
(Three- Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

HINDI LITERATURE
SECOND PAPER
नाटक एवं निबंध

TIME ALLOWED : THREE HOURS

Maximum Marks – 100

(1) No supplementary answer-book will be given to any candidate. Hence the candidates should write The answer precisely in the main answer-book only.
किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नही दी जाएगी । अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों का उत्तर लिखें।

(2) All the parts of one question should be answered at the one place in the answer-book. One complete question should not be answered at different places in the answer book.
किसी भी एक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर उत्तर -पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल करें।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

P.T.O.

https://www.msbuonline.com

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) मेरी रक्षा करो। मेरे और अपने गौरव की रक्षा करो। राजा, आज मैं शरण की प्रार्थिनी हूँ। मैं स्वीकार करती हूँ कि आज तक मैं तुम्हारे विलास की सहचरी नहीं हुई, किन्तु वह मेरा अंहकार-चूर्ण हो गया है। मैं तुम्हारी होकर रहूँगी। राज्य और सम्पत्ति रहने पर राजा को- पुरूष को बहुत सी रानियाँ और स्त्रियाँ मिलती हैं, किन्तु व्यक्ति का मान नष्ट होने पर फिर नहीं मिलता।

(10 अंक)

अथवा

कितना अनुभूतिपूर्ण था वह एक छण का आलिंगन! कितने संतोष से भरा था! नियति ने अज्ञात भाव से मानो लू से तपी हुई बसुधा को क्षितिज के निर्जन से सायंकालीन शीतल आकाश में मिला दिया हो। (ठहरकर) जिस वायु-विहीन प्रदेश में उखड़ी हुई साँसों पर बन्धन हो-अर्गला हो, वहाँ रहते-रहते यह जीवन असह्य हो गया था। तो भी मरूँगी नहीं। संसार के कुछ दिन विधाता के विधान में अपने लिए सुरक्षित करा लूँगी।

(ख) क्या कर रहा है तू विक्रमजीत? भूल गया तू मेवाड़ का महाराणा है और यह विद्रोहिणी स्त्री है, जिसने मेवाड़ के जन-जन को वश में कर रखा है। यह मेवाड़ के धवल कीर्तिध्वज पर धब्बे के समान है। इस तरह आदिवासियों में उठना-बैठना, लोक-लाज छोड़कर नाचना-गाना राजमहल की स्त्रियों के आचरण के विरूद्ध है और मत भूल इसके एक इशारे पर जनता विद्रोह कर सकती है। (10 अंक)

अथवा

जब तक हमारी कमर में कटार है, हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। जहाँ तक पवित्रता की रक्षा का सवाल है, यदि ऐसा अवसर आ ही जाता है तो जिस कटार को हम शत्रु के सीने में नहीं उतार पायेंगी, अपने पेट में तो उतार ही सकती हैं।
परंतु आशंका और भय से ग्रस्त होकर जीते जी अपने को अग्नि की ज्वाला को अर्पित कर देने में न तो वीरता है और न ही बुद्धिमानी।

(ग) चेतन तो प्रत्येक मानव है, परंतु यह चेतना उस सीमा तक अपेक्षाकृत बहुत कम व्यक्तियों में पहुँचती है, जिस पर पहुँचकर वह बुद्धि की अभिधा प्राप्त कर सके। आज मानव की किसी शक्ति का प्रयोग हम व्यापक रूप में देख सकते हैं, तो वह वास्तव में मानव की कोई शक्ति नही है, मानव द्वारा वशीकृत जड़ पदार्थ की शक्ति है। आज निःसन्देह सत्ता का युग है, लेकिन वह सत्ता पैसे की है, धातु की है, यंत्र की है, आर्थिक संगठन की है।

(10 अंक)

अथवा

https://www.msbuonline.com

दुनिया में दुःख तो बहुत हैं, परन्तु अगम-अगाध गम्भीर दुःख बहुत ही कम। ठीक वैसे ही जैसे काम बोध की खुजलाहट तो सबके पास है परंतु निर्मल उदात्त प्रेम की क्षमता विरले ही के पास होती है। काम ऊर्ध्वतर होता हुआ निर्मल ज्योतिष्मान होता जाता है। वैसे ही दुःख उल्टी दिशा में गंभीर से गंभीरतर होता हुआ प्रगाढ़ और पारदर्शक होता जाता है। ऐसा पारदर्शक कि वह सार्वभौमता का दर्पण बन जाये। निर्मल, प्रसन्न और गम्भीर दुःख।

(घ) वह देह नहीं देखता, वह देही की थिरकन देखता है, देह में ही वह दिव्यता की थिरकन दिखायी पड़ती है और यही देह की सार्थकता है। यही मानुष जन्म की सार्थकता है कि पुरूष नारी के लिए या नारी पुरूष के लिए जब आकर्षण से खिंचकर आकांक्षा करे, यह केवल प्यार का प्रारम्भ हो, यह स्नेह की पहली बूंद हो, जो पानी से भरी थाली में गिरती है तो फैलते-फैलते थाली की बारी तक चली जाती है और थाली को कितना भी धोइए थाली को छोड़ने के लिए तैयार नही होती, कुछ न कुछ लगी ही रहती है, उल्टे धोने वाले के हाथ को स्नेहिल कर देती है। (10 अंक)

अथवा

पर मन नहीं मानता। नाम इसलिए बड़ा नहीं है कि वह नाम है। वह इसलिए बड़ा होता है कि उसे सामाजिक स्वीकृति मिली होती है। रूप वयक्ति सत्य है, नाम समाज-सत्य। नाम उस पद को कहते हैं, जिस पर समाज की मुहर लगी होती है, आधुनिक शिक्षित लोग जिसे 'सोशल सैंक्शन' कहा करते हैं। मेरा मन नाम के लिए व्याकुल है, समाज द्वारा स्वीकृत, इतिहास द्वारा प्रमाणित, समष्टि-मानव की चित्त-गंगा में स्नात।

2. ध्रुव स्वामिनी नाटक के पात्र रामगुप्त की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (15 अंक)

अथवा

ध्रुवस्वामिनी नाटक की ऐतिहासिकता की समीक्षा कीजिए।

3. मुक्तिपथ नाटक की पात्र-योजना एवं चरित्र-चित्रण पर प्रकाश डालिए। (15 अंक)

अथवा

मुक्तिपथ नाटक शीर्षक का औचित्य स्पष्ट करते हुए उसके उद्देश्य को वर्णित कीजिए।

4. लोभ एवं प्रीति निबंध के आधार पर आचार्य शुक्ल की निबंध कला की विशेषताएं बताइये। (15 अंक)

अथवा

https://www.msbuonline.com

डॉ० नगेन्द्र के 'कविता क्या है?' निबन्ध की मूल-संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्ही दो पर टिप्पणी लिखिए। (7.5+7.5=15 अंक)

(क) जयशंकर प्रसाद की निबंध-शैली।
(ख) ध्रुवस्वामिनी नाटक की मन्दाकिनी।
(ग) मुक्तिपथ नाटक में नारी चेतना।
(घ) भारतीय साहित्य की एकता निबन्ध की भाषा शैली

*****

https://www.msbuonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

https://www.msbuonline.com